

नासिरा शर्मा के उपन्यास 'पारिजात' में सांस्कृतिक चेतना के विविध आयाम

असरा अख्तर

पीएच.डी शोधार्थी

हिंदी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश

नासिरा शर्मा के उपन्यास 'पारिजात' पर आधारित यह शोध आलेख भारतीय सांस्कृतिक चेतना के विविध आयामों को स्पष्ट करता है। नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास के माध्यम से समाज, संस्कृति और मानवीय संबंधों को गहराई से अभिव्यक्त किया है। उपन्यास में भारतीय संस्कृति के मूल तत्व सत्य, करुणा, शील और लोकमंगल जीवन के व्यवहारिक रूप में उभरते हैं। लखनऊ और इलाहाबाद की सांस्कृतिक परंपराएँ, जैसे दीपावली, गंगा आरती और लोकजीवन, अत्यंत जीवंत रूप में प्रस्तुत की गई हैं, जिससे स्थानीय संस्कृति का सजीव चित्र सामने आता है।

इसके साथ ही लोकगीतों, संगीत और लोककलाओं के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक समृद्धि को दर्शाया गया है, वहीं ऐतिहासिक धरोहरों और सांस्कृतिक प्रतीकों के संरक्षण की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है। लेखिका यह भी दिखाती हैं कि आधुनिकता और तकनीकी विकास के कारण पारंपरिक कलाएँ और कलाकार संकट में हैं। गुरु-शिष्य परंपरा और संयुक्त परिवार व्यवस्था जैसे सांस्कृतिक मूल्यों को महत्वपूर्ण मानते हुए उनके बदलते स्वरूप को भी रेखांकित किया गया है। उपन्यास में नई पीढ़ी का अपनी जड़ों से कटाव और पुरानी पीढ़ी का अकेलापन एक गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में सामने आता है, जबकि रोहन जैसे पात्र अपनी सांस्कृतिक पहचान और इतिहास की खोज के माध्यम से अस्मिता की भावना को उजागर करते हैं। साथ ही, हिंदू-मुस्लिम एकता, मोहरम, रामलीला, गज़ल और मरिफिया के माध्यम से भारतीय संस्कृति की गंगा-जमुनी तहज़ीब को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'पारिजात' भारतीय संस्कृति के विविध रूपों का समग्र चित्र प्रस्तुत करने वाला उपन्यास है, जो न केवल सांस्कृतिक विरासत को सजीव करता है, बल्कि उसके संरक्षण और संवर्धन के प्रति जागरूकता भी उत्पन्न करता है।

मुख्य शब्द

भारतीय संस्कृति, गंगा-जमुनी तहज़ीब, धार्मिक सह-अस्तित्व, स्त्री-विमर्श, परंपरा और आधुनिकता, सांस्कृतिक प्रतीक, लोकसंस्कृति, लोकगीत एवं लोककलाएँ, गुरु-शिष्य परंपरा, संयुक्त परिवार व्यवस्था, सांस्कृतिक विरासत, सांस्कृतिक अस्मिता, प्रवासी जीवन, सामाजिक परिवर्तन, सांप्रदायिक सौहार्द।

मूल आलेख

भारतीय साहित्य में नासिरा शर्मा एक विशिष्ट हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज, संस्कृति और राजनीति के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। उनकी रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक दृष्टि से भी विशिष्ट स्थान रखती हैं। उनके उपन्यासों

में सांस्कृतिक चेतना के विभिन्न आयाम स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं, जिनमें धार्मिक सह-अस्तित्व, स्त्री-विमर्श, परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व, प्रवासी जीवन की समस्याएँ और सामाजिक-राजनीतिक बदलाव शामिल हैं, भारतीय संस्कृति सार्वभौम आदर्शों से प्रेरित रही है। सत्य की खोज, शील की प्रधानता, करुणा का आदर्श, सत्यं शिवं सुन्दरम् का संकल्प और इन सबके माध्यम से लोकमंगल की कामना इसका मुख्य ध्येय रहा है। कदाचित् भारतीय संस्कृति के इन्हीं गुणों को देखते हुए मैक्समूलर जैसे इतिहासकार स्पष्ट स्वीकार करते हैं "यदि मुझसे पूछा जाए कि मानवता के उत्कृष्टतम मूल्यों का पूर्ण विकास कहाँ हुआ है... तो मैं केवल भारत की ओर संकेत करूँगा और यदि यह पूछा जाए कि जीवन को समग्रता प्रदान करने के लिए, उसमें उत्तम आदर्शों को स्थापित करने के लिए, कौन से साहित्य से विशुद्ध-मार्ग-दर्शन प्राप्त करना चाहिए तो मैं पुनः भारत की ओर इंगित करूँगा।"¹¹ सांस्कृतिक मूल्य मनुष्य के जीवन में सुचारुता ला कर उसे जीने योग्य बनाते हैं। सांस्कृतिक मूल्यों के तालमेल द्वारा संस्कृति अपना वैशिष्ट्य बनाए रख पाती है। नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास 'पारिजात' में सांस्कृतिक पहलुओं को गहराई से छूकर अपनी विशिष्ट शैली के माध्यम से उसके मायनों को पाठकों तक पहुँचाया है। जैसे रामधारी सिंह दिनकर संस्कृति को जीने का एक ढंग मानते हैं - "संस्कृति ज़िन्दगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा हो कर समाज में छाया रहता है, जिसमें हम जन्म लेते हैं।"¹² यही बात 'पारिजात' में चरितार्थ हुई है। इस उपन्यास में हम देखते हैं कि लखनऊ और इलाहाबाद शहर में सदियों से छाई संस्कृति के विभिन्न रंग बिखरे हुए हैं। इलाहाबाद अपनी जीवन्तता से सभी को आकर्षित कर लेता है। यहाँ दीपावली पर सगुन स्वरूप 'दीये' उपहार के रूप में दिए जाते हैं। ये दीये आने वाले हर्ष, उल्लास व प्रगति के प्रतीक होते हैं। जब रोहन की महिला मित्र एलेसन पहली बार इलाहाबाद आती है तब रोहन की माँ एलेसन को दीये देते हुए कहती है कि "यह लो दीये। आज दिवाली है और तुम इस घर की होने वाली बहू। तुम्हारे दम से यह घर हमेशा रोशन रहेगा।"¹³ इस तरह से नासिरा शर्मा रोहन की माँ के द्वारा भारतीय संस्कृति के प्रसारित होने की प्रक्रिया भी दिखाती हैं। साथ ही नासिरा शर्मा इलाहाबाद की अन्य विशेषताओं का चित्रण भी करती हैं। जैसे 'गंगा की आरती' इलाहाबाद का खास आकर्षण है। पारिजात में रोहन जब गंगा के बहते पानी को देखता है तो उसे अपनी माँ के समान अनुभव करता है। इसी तरह हर भारतीय अपने-अपने जीवन अनुभवों के अनुसार गंगा से लगाव महसूस करता है।

पारिजात में विभिन्न लोकगीतों की उपस्थिति ने उपन्यास को मोहकता प्रदान की है। कहीं इलाहाबादी अमरूद की प्रशंसा में गाये जा रहे गीत तो कहीं मुरली की मधुरता आपको भारत की समृद्ध सांगीतिक विरासत से परिचय कराते ही रहते हैं। लोकगीत प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। 'पारिजात' में इन्हीं मनोहारी गीतों से लोगों के जीवन में हर्ष-उल्लास और उमंग का संचार दिखाई देता है। रोहन और रूही जब गाँव मलीहाबाद पहुँचते हैं तो देखते हैं कि लू और गर्मी के बीच दोपहर के समय महुवे के घने पेड़ के नीचे अपने साथियों के संग बैठा जवान जोश मलीहाबादी की मुरली गाने में मस्त था -

"चहके-चहके नर-नारी
सब मिल-मिल बारी-बारी
छलकी पनघट में गगरी
अर्जुन ने धनुक लचकाई
यह किन ने बजाई मुरलिया
हृदय में बदरी छाई।"¹⁴

किसी भी समाज के सांस्कृतिक मूल्यों की पहचान का एक महत्वपूर्ण पहलू जीवन की कलात्मकता है जैसे कि पाश्चात्य विचारक टी.एस. इलियट संस्कृति को उत्त्वस्तरीय बौद्धिक तथा कलात्मक उत्कृष्टता मानते हैं, वह चाहे एक व्यक्ति से सम्बंधित हो या पूरे समाज से। वह कलात्मकता को संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग मानते हैं जो बौद्धिक विकास होने पर ही संभव है।¹⁷ पारिजात में नासिया शर्मा इसी ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करने की प्रयास करती हैं कि वास्तुकला के बेहतरीन नमूने हमारे ऐतिहासिक शहर व धरोहरें आज क्षीण होते जा रहे हैं। हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए और अतीत की स्मृतियों को संजोके रखने का प्रयास करना चाहिए। जबकि विदेशों में सदियों पुरानी इमारतें आज भी जीवंत हैं। दर्शकों के आकर्षण का केंद्र हैं। रोहन जब लखनऊ वापस लौटता है तो कहता है, "यह गलियाँ देख कर रोम की गलियाँ याद आ गई। फिर पल भर रुक कर वह बोसीदा घरों की वास्तुकला को तारीफी नज़र से देखते हुए कहने लगा, "हम अपनी तारीख को किस तरह मिट्टी में मिला देते हैं। बाहर वाले ऐसी जगहों को विशेष आकर्षण का नाम दे कर डॉलर, पाउंड, यूरो कमाते और उससे मेटेनेंस का खर्च भी निकाल लेते हैं।"¹⁵ ये ऐतिहासिक इमारतें हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतीक हैं। नासिया शर्मा संकेत करती हैं कि सांस्कृतिक प्रतीकों का बचाव ज़रूरी है। यहाँ यह तथ्य उजागर करने का प्रयत्न है कि संस्कृति प्रतीकों के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती है। संस्कृति में प्रतीकों को महत्व देते हुए लेस्ली.ए. व्हाइट अपना विचार व्यक्त करते हैं - "संस्कृति विकासशील और प्रसरणशील होती है और प्रतीकों के माध्यम से अपना कार्य सम्पादित करती है।"¹⁶ इस तरह सांस्कृतिक प्रतीकों की महत्ता समझ में आ जाती है। यदि आज हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को खो देते हैं तो अब से सौ-दो सौ सालों बाद जब इस दौर का इतिहास लिखा जा रहा होगा तो उसमें इन चीजों का ज़िक्र नहीं होगा। भावी पीढ़ी संस्कृति के इस पहलू से वंचित रह जाएगी।

पारिजात उपन्यास में हम देखते हैं कि वास्तव में भारतीय संस्कृति की कलात्मकता का उत्कृष्टतम विकास गाँवों में हुआ है। यहाँ नासिया शर्मा अनेक हुनरबाजों की चर्चा करती हैं जैसे कहीं कोई बड़े अच्छे दास्तांगो थे तो कहीं कोई शरूस मसनवी ज़हरे इश्क पढ़ने में अपना जवाब नहीं रखता था। कहीं लखनऊ के शोहदों, भाँड़ो और साधु बच्चों के फन की चर्चा है। पारिजात में नासिया शर्मा दिखाती हैं कि जिस भारतीय साहित्य और संस्कृति पर हम गर्व करते हैं, उसके निर्माण में भारत के छोटे से छोटे वर्ग का बड़ा योगदान है जैसे वह उस दौर का स्मरण करवाती हैं जब फकीरों के भी खानदान होते थे और वे कैसे मांगते-खाते भारतीय साहित्य व संगीत आदि से जुड़े सांस्कृतिक मूल्यों को समृद्ध करने में योगदान दे रहे थे। "उस पुराने लखनऊ की रौनक जब फकीरों का काम सिर्फ हाथ फेंलाना नहीं होता था। ये मोहल्लों में भीख मांगते नहीं घूमते थे, बल्कि बड़े-बड़े समारोहों में यह बाहर टहलते फारसी के शेर पढ़ते, फलियाँ कसते, कभी-कभी खुद नज़्में कह तरन्नुम से गाते।...सुनने वालों के ठठ लग जाते और चंद घंटों में मुनासिब आमदनी हो जाती थी।"¹⁷ इनमें से कुछ आगे चलकर बड़े कव्वाल बन बैठे। वर्तमान में लोक-कलाओं और कलाकारों के जीवन में परिवर्तन आ गया है। तकनीक के विकास ने कुछ कलाओं का रूप बदल दिया है, जैसे खेल-तमाशों और नुक्कड़ नाटकों आदि की जगह सिनेमा ने ले ली है, वहीं कुछ कलाओं को बिल्कुल खत्म ही कर दिया है जिससे कुछ कलाकारों के भूखे मरने की नौबत आ गई। गुड़ियाँ या कठपुतलियाँ आदि बनाने वाले कलाकार तो अपने घरों से ही उजड़ गए और कहीं और जा कर बस गए। इनकी ऐतिहासिक कलाकृतियाँ लगभग विलुप्त हो गई। इतना ही नहीं स्वयं कलाकार भी अपनी कला के प्रति उदासीन हो कर उसे खो देते हैं। वे लिखती हैं, "इनके घरों के पुराने बड़े बक्स में आज भी मूली-गाजर की तरह पुरानी कठपुतलियाँ पड़ी हैं, जो दास्ताने लैला-मजनू, किरसा-ए-नल व दमन, कहानी शीरी और फरहाद खेला करती थी। पश्चिम के देशों की तरह हिन्दुस्तान में पुरानी ऐतिहासिक कलाकृतियों की वैसी पूछ नहीं है, वरना ये सारे आशिक व माशूक लाखों, करोड़ों में बिक कर किसी संग्रहालय या अमीरों के घरों की ज़ीनत बने होते।"¹⁸ यहाँ नासिया शर्मा हस्तशिल्प

आदि ललित कलाओं के ज्ञाताओं की तरफ़ पाठकों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास कर रही हैं और साथ ही साथ भारतीय संस्कृति में उनके योगदान को भी रेखांकित करती हैं।

भारतीय संस्कृति में गुरु को माता-पिता से भी ऊँचा दर्जा दिया गया है। समय के साथ इस परंपरा में तो परिवर्तन आ गया है किन्तु गुरु को आज भी वही सम्मान प्राप्त है। पारिजात में इसी गुरु-शिष्य-परम्परा का अद्भुत निदर्शन दिखाई देता है। पत्नी प्रभा के निधन के बाद प्रो. प्रहलाद दत्त को उनका शिष्य निखिल और उसकी पत्नी शोभा जो प्रभा की शिष्या रही है, संभालते हैं। प्रो. दत्त के हर सुख-दुःख में साथ खड़े रहते हैं। प्रो. दत्त के सपनों का महल (बंगले) के बिक जाने पर उनकी इच्छा के अनुसार कोटरा बहादुरगंज में स्थित उनके पुश्तैनी घर की मरम्मत करवाते हैं। निखिल, रोहन और अपनी बचत के पैसे मिला कर प्रो. दत्त के बंगले को अग्रवाल स्वीट वाले से पुनः खरीदकर अपने शिष्यत्व का और रोहन के बड़े भाई का फ़र्ज़ अदा करता है। यह इतना अनूठा रिश्ता है कि आवश्यकता पड़ने पर यह मित्रता और संरक्षक का रूप भी धारण कर लेता है। जिसे एक बार दिल से गुरु मान लिया वह आजीवन गुरु रहता है यही बात इस रिश्ते की बुनियाद है।

भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार व्यवस्था एक महत्वपूर्ण घटक रही है। इन परिवारों में बच्चों को सभी संस्कार देने की पूरी कोशिश की जाती है जिससे सभी सांस्कृतिक मूल्य बच्चे के अंदर रच-बस जाते हैं। महादेवी वर्मा ने इसी परिवेश की ओर संकेत करते हुए लिखा है - "संस्कृति शब्द से हमें जिसका बोध होता है, वह वस्तुतः ऐसी जीवन पद्धति है, जो एक विशेष प्राकृतिक परिवेश में मानव निर्मित परिवेश सम्भव कर देती है और फिर दोनों परिवेशों की संगति में निरंतर स्वयं आविष्कृत होती रहती है।"⁹ लेकिन वर्तमान में यह व्यवस्था बदल रही है। नासिरा शर्मा ने अपने इस उपन्यास में अनेक स्थलों पर वर्तमान समाज की इसी दबी हुई नस के दर्द से पाठकों को रूबरू करवाया है जिससे लगभग हर मत का परिवार पीड़ित है। यह दर्द है-नई पीढ़ी का अपनी जड़ों से कट जाना और बाहरी ज़िंदगी में रच-बस जाना। पीछे रह जाते हैं तनहा जीने को विवश व नौकरों पर आश्रित बूढ़े माँ-बापा। ऐसी ही अभागी माँ है- विधवा फिरदौस जहाँ, जो अपने पुत्र मोनिस के विदेश में बस जाने तथा पति के देहांत के बाद अकेली लखनऊ की एक आलीशान पुश्तैनी हवेली में रहती है और वहीलचेयर पर ही चल फिर सकती है। जब वह मोनिस को वापस लौट आने का कहती है तो वह उल्टा माँ को यूरोप आने का कहता है। वह कहता है- "नो मोर डायलोग मॉम ! उस शहर की ठहरी ज़िंदगी में आ कर मुझे मरना नहीं है। आप और रूही के अलावा वहाँ मेरा अपना बचा कौन है। किसके लिए यह सब छोड़ूँ? मेरे सारे दोस्त यूरोप भर में फैले हुए हैं। मुझे बेकार के इमोशंस में मत उलझाइए...वह घर बोसिदा हो चुका है।...हमारी यादें, हमारा दिल, दिमाग और ये आँखें हैं। वह घर और शहर नहीं।..."

"अच्छा मॉम ख्याल रखिएगा। मैंने चेक डाल दिया है। गुडनाइट", 'गुडनाइट' कहते-कहते फिरदौस जहाँ अपने आँसू रोक नहीं पाई। कैसे कहती कि मुझे चेक की नहीं, तुम्हारी चाहत है।"¹⁰ इस तरह एक तरफ़ संस्कृति से लगाव नज़र आता है दूसरी तरफ़ अलगाव। जहाँ एक ओर मोनिस है जो अपनी जड़ों से कट चुका है और वापस नहीं आना चाहता है। वहीं दूसरी ओर रोहन है जो अपनी जड़ों को खोजने के लिए बेचैन है। नासिरा शर्मा ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से इतिहास के अनेक अनछुए पहलुओं को कुरेदा है। ऐसा ही एक अनछुआ वृत्त है रोहन के द्वारा मोहयाल और हुसैनी ब्राह्मण के इतिहास को जानने की कोशिश, जिसमें अंततोगत्वा उसे सफलता मिलती है। रोहन लखनऊ निवासी सफ़ीर के साथ मिल कर इसका इतिहास जुटाने की कोशिश करता है। काफ़ी खोजबीन के बाद 'हिस्ट्री ऑफ़ द मोहायल्स' नामक पुस्तक के कुछ अंश मिल जाते हैं जिससे रोहन को अपने इतिहास की कुछ जानकारियाँ मिल जाती हैं। कैसे मोहयाल नाम

पड़ा, कैसे ईयाक पहुँचे और कब, क्या हुआ आदि बातें समझ में आ जाती हैं। नासिरा शर्मा मानो निष्कर्ष रूप में लिखती हैं, “कर्बला की जंग में जिस दत्त ब्राह्मण ने हज़रत हुसैन का साथ देने का वायदा किया था। आज भी ये लोग इसी कारण हुसैनी ब्राह्मण कहलाते हैं”¹¹ रोहन का अपना इतिहास जानने के लिए बेवैत होने से पता चलता है कि इसका संबंध अस्मिता से है, अपनी पहचान से है। पहचान का संबंध संस्कृति से है। यदि हमें हमारे सांस्कृतिक इतिहास और विरासत का पता नहीं होगा तो हम अपनी पहचान खो देंगे। मोहम्मद का मुस्लिमों के जीवन में विशेष स्थान है और अब ये पूरे भारत की संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। नासिरा शर्मा की सांस्कृतिक दृष्टि मोहम्मद या फिर किसी भी त्योहार को पूरे भारत के उत्सव के रूप में देखती है। पारिजात में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं- “मोहम्मद का सबसे खुशनुमा रंग लखनऊ का मशहूर है, मगर भारतीय संस्कृति का जो मिला-जुला रंग पूरे हिंदुस्तान में इन दिनों मिलता और दिखता है। उसे जीने और देखने वाले हम सब उसी में डूबे रहते हैं और हमारा तुम्हारा करके नहीं देख पाते हैं... ‘महाभारत’ हो या ‘रामायण’ या फिर ‘कर्बला’ की घटना आम आदमी के एहसास से कितनी नज़दीक है तभी यह हमारे देश के हर आम व खास के ज़रिए बाँची जाती है”¹² पारिजात में सांप्रदायिक सौहार्द के और भी उदाहरण देखने को मिलते हैं। दशहरा के समय सड़कों पर रामलीला देखने वालों की भीड़ लग जाती है। लेखिका के अनुसार लखनऊ में नवाबों द्वारा शुरू की गई यह रामलीला जनमानस में इस तरह बस चुकी है कि चाहे रामजान पड़े या मोहम्मद, दशहरा की रामलीला में काम करने वाले दुनिया भूल कर उसी में डूबे रहते हैं। “कहने को झाँकियाँ तो शहर की चौड़ी सड़कों से निकलती थी, मगर जो मज़ा रहमत उल्लाह के दादा को रावण बनाने में आता था, वह सुख उन्हें अपनी अम्मा की बनाई बाज़रे की रोटी में भी नहीं मिलता था”¹³ इस तरह पारिजात में हम देखते हैं कि हिंदू-मुस्लिम एक साथ प्रेम से रहते हैं। रोहन और रूही दोनों के परिवार आपसी प्रेम और मित्रता की मिसाल हैं। इतना ही नहीं अंत में रोहन और रूही विवाह का निर्णय ले कर प्रगतिशील दृष्टि का परिचय भी देते हैं।

पारिजात में गज़लों व मर्सिया की उपस्थिति ने इसे विशिष्टता प्रदान की है। उपन्यास में रह-रहकर कहीं शेरों की बहार आती है तो कहीं मर्सिया के माध्यम से कर्बला का दर्द बयाँ हुआ है। मर्सिया हुसैन इब्न अली और कर्बला के उनके साथियों की शहादत और बहादुरी को बताने के लिए लिखा गया महाकाव्य है। इसे एक प्रकार का शोक-काव्य भी कह सकते हैं। “मर्सिया की शव्ल में इस पूरे किस्से को बयान करने में जो क्रीएटिविटी थी, उसने खुद मर्सिये के लिए नए दरवाज़े और रोशनदान खोले।... कर्बला की अपनी तारीख है, मगर मर्सिया खुद भी उसके बयान की कारीगरी में अमर हो गया। उस पर गज़ब की यह घटना घटी रेगिस्तान में और मर्सियागों शायरों ने हिंदुस्तानी जुबानों, मुहावरों, एहसासों, रिश्तों और हिंदुस्तानी रस्म व रिवाजों से उसको सजाया।...

कैद में उनकी बहु आई हैं शब्बर हैं कहाँ,
नंगे सर जैनबे दिलगीर है, सरवर है कहाँ
जिबहा खंजर से हुआ जो वह पितर किसका है,
इक ज़रा गौर से देखो कि यह सर किसका है।

“यही है मर्सिया, जो मज़हब से नहीं इंसानी ज़बे से ताल्लुक रखता है”¹⁴ मर्सिया भले ही किस्सा कर्बला की जंग का हो लेकिन हर भारतीय अपनी भावनाओं के हिसाब से उससे जुड़ाव महसूस करता है, जैसे - रोहन जब मर्सिया सुनता है तो अपने बिछड़े बेटे को याद कर गमगीन हो जाता है। इस तरह नासिरा शर्मा प्रमाणित कर देती हैं कि यह मर्सिया कोई एक धर्म की मजलिस नहीं बल्कि इंसानी भावनाओं का बयान है।

जोकि सबके लिए हैं। पारिजात में नासिरा शर्मा ने संस्कृति में हुए समयगत परिवर्तनों पर भी दृष्टि डाली है। उपन्यास में बहुत से संवादों के द्वारा लेखिका ने समझाया है कि धीरे-धीरे सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट आती जा रही है। इतना ही नहीं नासिरा शर्मा ने अपने इस उपन्यास में पीढ़ीगत बदलावों से नई पीढ़ी को रूबरू कराने के लिए प्लैस बैंक (पूर्व दीप्ति) के समान ही पत्रलेखन पद्धति का उपयोग किया है। एक माँ के द्वारा अपनी बेटी के नाम पत्र शैली में लिखी जा रही पुस्तक के माध्यम से यहाँ प्राचीन लखनऊ की संस्कृति और वर्तमान लखनऊ की संस्कृति को तुलनात्मक अध्ययन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। नासिरा शर्मा ने एक प्रकार से प्राचीन पीढ़ी के अनुभवों का नई पीढ़ी में सम्प्रेषण करके वर्तमान युग की ज़रूरत को भी पूरा किया है।

अंततः नासिरा शर्मा ने पारिजात में विभिन्न संदर्भों के द्वारा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को सजीव कर दिया है। उपन्यास के लगभग हर वाक्य से संस्कृति का एक रंग उभर आता है। इसमें देश-विदेश के परिवेश के वर्णन के द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक पहलुओं से रूबरू होने का अवसर मिलता है। विशेषकर इलाहाबाद और लखनऊ की संस्कृति तो साकार हो उठी है। उपन्यास में हिंदू-मुसलमान दोनों के खान-पान, रीति-रिवाज, रस्में, रहन-सहन, तीज-त्योहार, आचार-विचार, लोक-कलाएँ, जीवन-पद्धति, परम्पराएँ, साज-सज्जा, आभूषण इत्यादि से जुड़े सांस्कृतिक मूल्यों का कुशल चित्रण किया गया है। इस तरह यह उपन्यास सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल बनने में सक्षम है। इस उपन्यास में काल-प्रभाववश आये बदलावों की जानकारी भी बहुत रोचक शैली में प्राप्त होती है। साथ ही सांस्कृतिक विरासत के प्रति चेतना जगाने का प्रयास भी किया गया है। कह सकते हैं कि पारिजात भारतीय संस्कृति के विभिन्न रूपों का संगम है।

संदर्भ

1. Max Muller, 'India : what can teach us ?' Rupa publication, 2002, P.-06
2. रामधारी सिंह दिनकर: संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, 2022 पृष्ठ-53
3. नासिरा शर्मा: पारिजात, किताबघर प्रकाशन, सं-2020, पृष्ठ-09
4. वही, पृष्ठ-167
5. थोमस ओटवे: शिक्षा तथा समाज, पृष्ठ-26, अनुवाद : ब्रजभूषण शर्मा
6. नासिरा शर्मा: पारिजात, पृष्ठ-260
7. (Cultrue is an organization of phenomena - acts, objects, Ideas and Sentiments that is dependent upon the use of symbols) by Franois E. Merri and Worth Eldridge 'Culture and Society', p.-42
8. नासिरा शर्मा: पारिजात, पृष्ठ-171
9. वही, पृष्ठ-173
10. महादेवी वर्मा: भारतीय संस्कृति के स्वर, पृष्ठ-74
11. नासिरा शर्मा: पारिजात, पृष्ठ-136
12. वही, पृष्ठ-114
13. वही, पृष्ठ-425
14. वही, पृष्ठ-226
15. वही, पृष्ठ- 97-104
